ISSN : 2583-2948

जी० राधिका
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी
ए आई बी एम, ए आई टी कैंपस,
ज्योति निवास नगर, चिकमंगलूरू – 577102
मो० : 9945672860

भारतीय समाज के उन्नति में भारतीय साहित्य का अवदान

साहित्य शब्द का अर्थ विस्तार से माना जाता है। साहित्य समाज के निर्माता है, वह समाज के शक्ति, युक्ति है जिससे अच्छे समाज का सृष्टि हो सकता है। हर एक भाषा के साहित्य अपना विशेषता स्थापित कर चुके है। इस आलेख में हिन्दी भाषा का साहित्य और कन्नड भाषा साहित्य के महत्व प्रस्तुत करने की कोशिश किया गया है। हिन्दी भाषा के साहित्य को चार विभागों में विभाजित किया गया है।

१. वीरगाथा काल

२. रीतिकाल

३. मध्यकाल

४. आधुनिक काल

हर एक समय के कवि गण अपने साहित्य व्दारा समकालीन युग में अपना छाप छोडे है। इन कवियों का परिचय संक्षिप्त रूप से करने का प्रयास इस आलेख में किया गया है।

कन्नड भाषा के साहित्य भी भारत के दक्षिण के समाज पर बहुत गहरा प्रभाव डाला है। कन्नड भाषा के साहित्य के भेद -

१. पूर्व हलेगन्नड

२. हलेगन्नड

३. नडुगन्नड

४. होसगन्नड

इसमें रन्न, पोन्न, दास साहित्य, वचन साहित्य के साहिति समाजसुधारक के स्थान पर रहकर समाज के उन्नति में अपना सहयोग दिये है। कन्नड साहित्य का संक्षिप्त करने का कोशिश किया गया है।

आदिकाल (1050-1375)

हिन्दी साहित्य का प्रथम काल यह आदिकाल या वीरगाथा काल कहा जाता है। यह काल युध्दों का समयभी कहते है। इस समय में राजा लोग अपने-अपने राज्य को विस्तार करने के लिए अपने में ही झगडा कर रहे थे। वहाँ के कवि गण अपने राजाओं को युध्द में प्रेरणा देने कि लिए वीर गीतों की रचना करते थे। इन वीरगीतों से प्रेरित होकर राजा लोग युध्द करते थे। इस समय मे अनेक ग्रंथों की रचना हुई वह - चंदबरदाई का पृथ्वीराज रासो - इसमें दिल्ली नरेश पृथ्वीराज चौहान के वीर गाथाओं को देख सकते है। इसके अलावा अमीर खुसरो, विध्यापति के पदावलियों उस काल के समाजिक स्थिति को देख सक्ते है। इन ग्रथों के सहारे उस समय के समाज का परिचय भी मिल जाता है।

भक्तिकाल (1375-1700)

वीरगाथा काल की युध्दों से समाज तितर-बितर हो गया था। भक्तिकाल के कवि गण अपने कविताओं व्दारा समाज को नेक रास्ते पर लाने की कोशिश की। इस काल के कवि लोग समाज सुधारक बनकर अपने कार्य किये है। लोगों के मन एकता लाने के लिए ही वे दोहे लिखते थे। इन दोहों के व्दारा समाज के लोगों का मन: परिवर्तन होने लगा। जैसे कबीर दास, सूरदास, रैदास, मीराबाई। हर एक कवि अपने-अपने तरीखे से समाज सुधारने की कोशिश किये है।

इस भक्तिकाल के साहित्य को दो भागों में विभाजित किया गया है

1. निर्गुण भक्तिशाखा 2. सगुण भक्तिशाखा

निर्गुण में दो भाग है

1. ज्ञान मार्गी शाखा :-

इस शाखा के कवि गण ज्ञान को ही ज्यादा महत्व देते थे। ज्ञान से मुक्ति मिलने का संदेश देते थे। इस शाखा के प्रमुख कवि कबीरदासजी थे। कबीरदास गुरू और ज्ञान को महत्व देते थे। इनकी रचना -

"गुरू गोविंद दोऊं खडे काके लागू पांय।

बलिहरि गुरू आपने गोविंद दियो बताय।"

2. प्रेममार्गी शाखा :-

इन कवियों ने समाज हर एक के दिल में प्यार की भावना पैदा करने के लिए अपने दोहे की रचना करते थे। अपने कविता के द्वारा समाज में प्रेम भावना फैलाकर व्देष भावना को समाज दूर करने की कोशिश की।

नैन बाँक सरि पूज न कोऊ। मान समुँद अस उलथहिं दोऊ॥

राते कँवल करहिं अलि भवाँ। घूमहिं माँति चहहिं उपसवाँ॥

उठहिं तुरंग लेहिं नहिं बागा। चाहहि उलथि गगन कहँ लागा॥

पवन झकोरहिं देहिं हलोरा। सरग लाइ भुइँ लाइ बहोरा॥

जग डोलै डोलत नैनाहाँ। उलटि अड़ार चाह पल माहाँ॥

जबहिं फिराव आँगन गहि बोरा। अस वै भँवर चक्र के जोरा॥

सहुँद हिंडोर करहिं जनु झूले। खंजन लुरहि मिरिग जनु भूले॥

सुभर समुँद अस नैन दुइ मानिक भरे तरंग।

आवत तीर जाहिं फिरि काल भंवर तेन्ह संग॥

मल्लिक महमद जायसी के पध्मावत के एक कविता उदाहरण देख सकते है।

सगुण भक्ति शाखा

1. रामभक्ति शाखा :-

इस शाखा के कवि राम पर भरोसा रखनेवाले कवि थे। मानव जीवन का उध्दार केवल राम से ही होनेवाला है। राम के बिना इस दुनिया में एक पशु-पक्षी भी नही हिलनेवाला है। हर एक जीवी का जनम और मृत्यु के कारण ही राम है। इस शाखा के प्रमुख कवि तुलसीदास जी है। वे अपने रामचरित मानस में राम के दशावतारों का भी वर्णन किये है।

"तुलसी भरोसे राम के, निर्भय हो के सोए,

अनहोनी होनी नही, होनी हो सो होए।

तुलसीदास जी कहते है की हमे भगवान आर भरोषा करते हुए बिना किसी डर के साथ निर्भय होकर रहना चाहिए और कुछ भी अनावश्यक नही होगा और अगर कुछ होना रहेगा तो वो होकर रहेगा इसलिए व्यर्थ चिंता किये बिना हमे ख़ुशी से जीवन व्यतीत करना चाहिए।

2. कृष्ण मार्गी शाखा :-

कृष्ण मार्गी शाखा में सूरदास प्रमुख है। सूरदास कृष्ण भक्ति के व्दारा मुक्ति पाने का मार्ग का प्रसार किया। इस कृष्ण मार्गी शाखा के प्रमुख कवियों में मीराबाई अव्वल स्थान में है। मीराबाई कृशण को अपना सब कुछ मानती है। वह कृशण के दासी बनकर कृष्ण के बाल लीलाओं को अपने पदों के व्दारा समाज तक पहुंचाने की कोशिश करती है।

ऊधौ , तुम हौ अति बड़भागी ।

अपरस रहत सनेह तगा तैं , नाहिन मन अनुरागी ।

पुरइनि पात रहत जल भीतर , ता रस देह न दागी ।

ज्यौं जल माहँ तेल की गागरि , बूँद न ताकौं लागी ।

प्रीति – नदी मैं पाउँ न बोरयौ , दृष्टि न रूप परागी ।

‘ सूरदास ‘ अबला हम भोरी , गुर चाँटी ज्यौं पागी ||

ऊपरयुक्त हर एक कवि अपने रचनाओं के के व्दारा समाज में परिवर्तन लाने का प्रयास किया इसका परिणाम यह हुआ कि समाज में अच्छा वातावरण पैदा होने लगा। लोगों के मन में भगवान के प्रति भक्तिभाव उगने लगा । दया, धर्म, भक्ति से भरा हुआ समाज का निर्माण होने लगा।

मध्यकालीन :-

इस काल को रीतिकाल या शृंगार काल कहा जाता है। रीतिकाल में शृंगार की प्रवृत्ति हिन्दी काव्य जगत की सर्वप्रधान और सर्वव्यापक प्रकृति थी। वह मुगल साम्राज्य की अवनति और विनाश का काल था। छोटे-बडे राजाओं आंतरिक रूप से स्वतंत्र थे। मुगल शासकों की कलाप्रियता से विभिन्न कला-शैलियों को अधिक प्रोस्ताहन मिला था। उस काल में काव्य, कला और संगीत की पर्याप्त उन्नति हुई थी। औरंगाजेब इके धार्मिक पक्षपात के कारण हिंदू - मुसलमानों में पुन: लगाव की भावना उत्पन्न हुई।

आधुनिक साहित्य

शोला बार्थ का कहना है कि "लेखन" इतिहास जनक एकात्मता की क्रिया है और उपन्यास सामाजिकता का कृत्य, इस दृष्टि से 'राग दरबारी' अपने समय का एक सार्थक 'कथा-प्रयोग' भी सिध्द होता है, जिसके लेखों में कई परते है। दूसरी शब्दों में विभिन्न सूत्रों एवं स्त्रोतों के सम्मिश्रण से रचित इसकी संरचना कोलाज की तरह है। एक ऐसी संरचना जिसमें समाज का मुकम्मल आईना दिखाने के लिए नानाविध क्षेत्रों में (टुच्ची, चुनाव, राजनीति, गाँव-देहात जीवन, जात-पांत, नौकरशाही, लालफीताशाही) की संयोजित सामाग्री इस्तेमाल की गयी है।

नवे दशक से कृषि क्षेत्र में हुई बदलाव और किसानों की दुर्दशा और खास तौर से हाल के दशकों में किसानों व्दारा की जा रही आत्महत्या के मुद्देनजर को श्रीलाल शुक्ल ने हिन्दी पट्टी के गाँवों में जिन कुरूपताओं एवं निवृत्तियों को किशोरावस्था में शिनारत की थी, उनके ही विकसित रूप आज हमें प्रौढावस्था में दिखाई दे रहे है।

आलोचय उपन्यास में व्यंग्य- विनोद की तह में छिपे मानवीय सारतत्व की व्यापकता एवं गहराई का वर्णन ऐसे किया है - "हमसे सुंदर चित्रों की माँग की जाती है, किंतु उनके नमूने इस समाज - व्यवस्था में है कहाँ? आपके घिनौती वस्त्र आपकी

अपरिपक्व क्रांतियाँ आपका बातूनी बुर्जुआ, आपका मृत धर्म, आपकी निदृष्ट शक्ति, बिना सिंहासन के आपके बादशह से सब इतने काव्यात्मक है कि इनका चित्रण किया जाए? हम अधिक से अधिक इनका मखौल उडा सकते है।"[1]

पुराने समय में संसार में नारियाँ दबाके रखी गयी थी, भारत में तो कुछ अधिक ही दबी हुई थी। नारियों की अवज्ञा सिखाने वाली इस कुस्तित परंपरा को मूल भारतवर्ष में पुनरूत्थान में हिलाया। पिछले सौ वर्षो की कविताओं में नारी की इस स्थिति का बदलाव समझ सकते है। हमारी पहली प्रतिक्रिया रीतिकालीन कवियों की नारी-भावना के विरुध्द उठी क्यों कि उन्होंने नारी को केवल काम-क्रीडा का साधन समझा था और इसमें संदेह नही कि नारी को केवल कामिनी मानने से बढकर उसकी और कोई निंदा नही हो सकती।

दूसरा परिवत्रन में नारी का चित्रण ऐसा किया जाने लगा कि जो-सती-साहती, वीरा, बलिदानी और व्यागमय्रि नारियों के रूप में इसके साथ-साथ भारत के पुरुषों ने ही नारियों को अशिक्षित, अपाहिज और षंगू बना रखा है। नारी नर की समक्षिणी एवं उसका पूरक अंश है उअह अनुभूति ठीक उसके बाद ही उत्पन्न होने लगी।

छायावाद के समय आते ही हिन्दी में यह भावना जागृत हुई कि नारी नर से भी श्रेष्ठ है। पुनरुत्थान की प्रेरणा से चालित होकर कवि ने ऊर्मिला को सहानुभूति दी तथा उसके व्यक्तित्व को जगाने एवं संवारने का प्रयास किया।

"ऊर्मिला को लेकर कवि ने इस प्रश्न पर सोचना आरंभ किया..... उसकी पूर्ण
परिणति यशोधरा में हुई है।"

इसी प्रकार अपने जमाने की तथाकथित आलोचना में प्रचलित किटकिटाइ गरजा अरू धारा गले अंदाज से क्षुब्ध होकर ही संभवत: मुक्तिबोध ने एक "साहित्यिक की डायरी" में आलोचक को साहित्य का दारोगा" कहा होगा। हमारे समय की आलोचना में व्याप्त मखौल उडाती हुई कात्यायनी कहती है :_

"आलोचक ने हुनर बताया/कविता की तरकीब सिखाई

खूब तरन से सीखी सबने। रेशस की बारीक कताई।

मधुकर सिंह की कहानी ’दुश्मन’ एक राजनीतिक कहानी है । जाहिर है कि उस समय में राजनीतिक प्रक्रिया काफी जटिल होती जा रही है, जिसके पीछे एक सामाजिक जागरण भी है। कारण यह कि समाज के दबे-कुचले लोग अब जाग रहे है। तथा अपने स्वत्व के लिए सामने आ रहे है, दुश्मन कहानी का जरोसर ऐसे ही लोगों के बीच से नेता के रूप में उभरता है और मंत्री बन जाता है। इससे दलित लोगों के मन में एक आशा जागृत हो जाती है।

खिलेगा तो देखेम्गे उपन्यास मेम पुलिस थाने से आतंकित औसत भारतीय ग्रामीण समुदाय के सदस्यों की मनोसामाजिक संरचना का जो मार्मिक एवं कलात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है वह मूल में ही पथनीय है। बहरहाल, कुछ प्रक्रियाँ द्रष्टव्य है - "पुलिस थाना करीब डेढ - दो साल से खाली पडा था और उजाड था। थाना इतने दिनों से खाली था तब भी गाँववालों की उस तरफ जाने की हिम्मत नही होती थी। बकरियाँ तक भूले-भटके उस तरफ नही जाती थी। थाने के अहाते के अंदर मीठे पाने का ही कुआँ था। केवल यही कुआँ होता और थाना नही होता तो कुएँ तुक नही था। गाँव हमेशा थाने के पीछे रहा आया और थाने इतने दिनों तक खाली रहने के बाद भी उसकी तरफ एक झोंपडी नही बढा।"[2]

कन्नड साहित्य

कन्नड साहित्य को इस काल विभाजन करके पढाया जाता है।

1. पंप पूर्व युग - शिवकोट्याचार्य और श्रीविजय प्रमुख थे।

2. पंपयुग - रन्न, पोन्न, जन्न जो रत्नत्रय कहलाया जाता है।

3. बसवयुग - बसवन्न, हरिहरा, राघवांका, अक्कमहादेवी जैसे वचनकार प्रमुख थे।

4. कुमारव्यासयुग - कुमारव्यास, पुरंदरदास, कनकदास जैसे दास साहित्य का उगम इस युग में हुआ था।

5. नया कन्नड साहित्य - कुवेंपु, बेंद्रे जैसे आधुनिक कवि गण इस युग का तारे बने थे।

उत्तर भारत में हिन्दी भाषा साहित्य समाज के अवदान में प्रेरणा दे रहा था। वैसे ही दक्षिण भारत में कन्नड भाषा साहित्य समाज को नेक रास्ते पर ले जाने में अपना सार्थक रूप दिखाया है।

कन्नड साहित्य में अशोक के समय के हल्मिडी शासना के व्दारा उस समय के भाषा, साहित्य की जानकारी मिलती है।

श्रवनबेलगोल में मिला हुआ बादामि शासन से कन्नड भाषा के छंद के बारे में जानकारी देनेवाला साहित्य है। कन्नड साहित्य के प्रथम ग्रंथ कविराजमार्ग में कन्नड राज्य के महत्व बताया गया है।

पंप भारत, आदि पुराण जैसे काव्य महाभारत और भरत बाहुबलि पुराणों के बारे बताते है। इस पुराण ग्रंथों में जीने की कला बताया जाता है। शिवकोट्याचर से लिखा हुआ वड्डाराधने में जीवन के जरूरी बातों को कहानीयों के व्दारा बताया गया है।

कन्नड साहित्य में रन्न जैसे माकवी से लिखा हुआ भीम विजय महाभारत का एक हिस्सा कहा जाता है। दुर्गा सिंह के पंचतंत्र कहानी इनसान की जीवन का एक मार्गदर्शक है। इसमें लिखा हुआ छोटे-छोटे कहानी बच्चों से लेकर बूढे लोगों तक हर एक को समज आनेवाला कहानी है।

कन्नड साहित्य का स्वर्ण्युग वचन साहित्य का युग माना जाता है। इस युग के वचनाकार समाज सुधारक का काम करते थे। अपने वचनों और उपदेशों के व्दारा समाज बसा हुआ तृटियों को मिटाने का कार्य करते थे। जैसे

“ಬೆಟ್ಟದ ಮೇಲೊಂದು ಮನೆಯ ಮಾಡಿ

ಮೃಗಗಳಿಗಂಜಿದಡೆಂತಯ್ಯಾ?

ಸಮುದ್ರದ ತಡಿಯಲೊಂದು ಮನೆಯ ಮಾಡಿ,

ನೊರೆತೆಗಳಿಗಂಜಿದಡೆಂತಯ್ಯ?

ಸಂತೆಯೊಳಗೊಂದು ಮನೆಯ ಮಾಡಿ,

ಶಬ್ದಕ್ಕೆ ನಾಚಿದಡೆಂತಯ್ಯಾ?

ಚೆನ್ನಮಲ್ಲಿಕಾರ್ಜುನದೇವ ಕೇಳಯ್ಯಾ,

ಲೋಕದೊಳಗೆ ಹುಟ್ಟಿದ ಬಳಿಕ ಸ್ತುತಿ ನಿಂದೆಗಳು ಬಂದಡೆ

ಮನದಲ್ಲಿ ಕೋಪವ ತಾಳದೆ ಸಮಾಧಾನಿಯಾಗಿರಬೇಕು."[3]

संदर्भ सूची ग्रंथ

1. "रवि रंजन- साहित्य का समाजशास्त्र और सौंदर्य शास्त्र व्यावहारिक परिदृश्य पृ.सं 37, वाणी प्रकाशन

2. खिलेगा तो देखेगें पृष्ट संख्या 10

3. विश्वपथ 96 प्रशांत नायक सुव्वि प्रकाशन 2022